चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	16-7-24	02	7-8

The Tribune
VOICE OF THE PEOPLE

HAU CONDUCTS ENTRANCE EXAMS

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University conducted the second phase of the entrance examination for undergraduate and postgraduate courses. The exam was conducted for admission to BFSc, BSc in agriculture, MSc in agriculture, MTech in agricultural engineering, MFSc and MSc in community science. Registrar Balwan Singh Mandal visited the examination centres and reviewed the arrangements made for the smooth conduct of the exam. Controller of Examinations Pawan Kumar said as many as 4,294 students had applied online for admission in these courses and 3,886 candidates had appeared for the examination.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	18.7.24	2	2-3

प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करते वैज्ञानिक।

गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए हकृवि का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

हिसार, 17 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा गुलाबी सुंडी एवं टिंडा गलन की समस्या के निवारण हेतु कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के मार्गदर्शन में 'कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। गांव उमरा व चूली कलां में आयोजित कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं टिण्डा गलन की समस्या के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। किसानों को नरमा फसल की उपरोक्त समस्याओं से निजात दिलाने के लिए 'विश्वविद्यालय आपके द्वार' तर्ज पर गांव-गांव कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

गांव उमरा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन सिरसा, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। केन्द्रीय कपास अनुसंधान सिरसा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एस.के. वर्मा, विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक, कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़, पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. अनिल सैनी ने नरमा फसल में होने वाले रोगो/बीमारियों की रोकथाम के बारे में किसानों को जागरूक किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	18.7.24	5	5 8

हकृवि द्वारा गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

गांव उमरा व चूली कलां में वैज्ञानिकों ने किसानों को दिए महत्वपूर्ण सुझाव

हिसार, 17 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा गुलाबी सुंडी एवं टिण्डा गलन की समस्या के निवारण हेतु कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के मार्गदर्शन में 'कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। गांव उमरा व चूली कलां में आयोजित कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं टिण्डा गलन की समस्या के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। किसानों को नरमा फसल की उपरोक्त समस्याओं से निजात दिलाने के लिए 'विश्वविद्यालय आपके द्वार' तर्ज पर गांव-गांव कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। गांव उमरा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन सिरसा, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। केन्द्रीय कपास अनुसंधान सिरसा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक, कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़, पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. अनिल सैनी ने नरमा फसल में होने वाले रोगो/बीमारियों की रोकथाम के बारे में किसानों को जागरूक किया। इस तरह के कार्यक्रम जिले के कृषि अधिकारियों एवं कीटनाशक विक्रेताओं के लिए भी आयोजित किए जाएंगे ताकि गुलाबी सुंडी की समस्या को कम किया जा सके। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि कपास अनुभाग समय-समय पर नरमा फसल की एडवाइजरी जारी करता है जिसकी अनुपालना करके किसान नरमा फसल की अच्छी पैदावार ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कपास फसल के लिए कीट संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं। नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाड़कर गुलाबी सुण्डी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुण्डी प्रौढ़ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिण्डा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 ईसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ईसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करते हुए वैज्ञानिक।

सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फ्लोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोप्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें। जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें। टिण्डा गलन के प्रबंधन के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। बरसात के बाद पानी की निकासी का प्रबंध करें। पहले खाद नहीं डाली है तो अब निराई गुडाई के साथ एक बैग प्रति एकड़ की बीजाई करें। अगर डीएपी पहले डाल चुके हैं तो आधा कट्टा यूरिया प्रति एकड़ डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	18.7.25	6	6-8

गुलाबी सुंडी एवं टिण्डा गलन की समस्या के निवारण हेतु 'कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित

'कृषि वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार उठाए कदम किसान'

सच कहूँ/संदीप सिंहमार

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा गुलाबी सुंडी एवं टिण्डा गलन की समस्या के निवारण हेतु 'कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। गांव उमरा व चूली कलां में आयोजित कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं टिण्डा गलन की समस्या के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। किसानों को नरमा फसल की उपरोक्त समस्याओं से निजात दिलाने के लिए 'विश्वविद्यालय आपके द्वार' तर्ज पर गांव-गांव कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

गांव उमरा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन सरसा, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। केन्द्रीय कपास अनुसंधान सरसा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, बिश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक, कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़,पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. अनिल सैनी ने नरमा फसल में होने वाले रोगो/बीमारियों की रोकथाम के बारे में किसानों को जागरूक किया। इस तरह के कार्यक्रम जिले के कृषि अधिकारियों एवं कीटनाशक विक्रेताओं के लिए भी आयोजित किए जाएंगे ताकि गुलाबी सुंडी की समस्या को कम किया जा सके।

इस विधि से करें कीटनाशकों का प्रयोग

नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाड़कर गुलाबी सुण्डी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुण्डी प्रौढ़ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिण्डा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 ईसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ईसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फलोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोप्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें।

एडवाइजरी की अनुपालना जरूरी

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि कपास अनुभाग समय-समय पर नरमा फसल की एडवाइजरी जारी करता है, जिसकी अनुपालना करके किसान नरमा फसल की अच्छी पैदावार ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कपास फसल के लिए कीट संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं

जड़ गलन के प्रबंधन के लिए परामर्श

जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधे की जड़ों में डालें। टिण्डा गलन के प्रबंधन के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

खाद से ऐसे करें प्रयोग

बरसात के बाद पानी की निकासी का प्रबंध करें। पहले खाद नहीं डाली है तो अब निराई गुड़ाई के साथ एक बैग प्रति एकड़ की बीजाई करें। अगर डीएपी पहले डाल चुके हैं तो आधा कट्टा यूरिया प्रति एकड़ डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18.7.24	3	5

गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा गुलाबी सुंडी एवं टिण्डा गलन की समस्या के निवारण हेतु कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के मार्गदर्शन में 'कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। गांव उमरा व चूली कलां में कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं टिण्डा गलन की समस्या के बारे में किसानों को जानकारी दी।

किसानों को नरमा फसल की उपरोक्त समस्याओं से निजात दिलाने के लिए 'विश्वविद्यालय आपके द्वार' तर्ज पर गांव-गांव कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

गांव उमरा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन सिरसा, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से कार्यक्रम किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	18.7.24	2	5

गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए किसानों को दिया प्रशिक्षण

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से गुलाबी सुंडी एवं टिण्डा गलन की समस्या के निवारण को लेकर 'कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। गांव उमरा व चूली कलां में आयोजित कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं टिंडा गलन की समस्या के बारे में किसानों को जानकारी दी।

'विश्वविद्यालय आपके द्वार' तर्ज पर गांव-गांव कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। गांव उमरा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन सिरसा, एचएयू व कृषि विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। केंद्रीय कपास अनुसंधान सिरसा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक, कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़, पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. अनिल सैनी ने नरमा फसल में होने वाले रोगों/बीमारियों की रोकथाम के बारे में किसानों को जागरूक किया। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	17.07.2024	--	--

गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा गुलाबी सुंडी एवं टिण्डा गलन की समस्या के निवारण हेतु 'कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। गांव उमरा व चूली कलां में आयोजित कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं टिण्डा गलन की समस्या के बारे में किसानों को जानकारी दी। किसानों को नरमा फसल की उपरोक्त समस्याओं से निजात दिलाने के लिए 'विश्वविद्यालय आपके द्वार' तर्ज पर गांव-गांव कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

गांव उमरा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन सिरसा, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। केन्द्रीय कपास अनुसंधान सिरसा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, विश्वविद्यालय के

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक, कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़, पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. अनिल सैनी ने नरमा फसल में होने वाले रोगो/बीमारियों की रोकथाम के बारे में किसानों को जागरूक किया। इस तरह के कार्यक्रम जिले के कृषि अधिकारियों एवं कीटनाशक विक्रेताओं के लिए भी आयोजित किए जाएंगे ताकि गुलाबी सुंडी की समस्या को कम किया जा सके। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि कपास अनुभाग समय-समय पर नरमा फसल की एडवाइजरी जारी करता है जिसकी अनुपालना करके किसान नरमा फसल की अच्छी पैदावार ले सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर न्यूज	17.07.2024	--	--

गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

नभ-छोर न्यूज ⏭ 17 जुलाई

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा गुलाबी सुंडी एवं टिण्डा गलन की समस्या के निवारण हेतु कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के मार्गदर्शन में कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। गांव उमरा व चूली कलां में आयोजित कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं टिण्डा गलन की समस्या के बारे में किसानों को जानकारी दी। गांव उमरा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन सिरसा, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। केन्द्रीय कपास अनुसंधान सिरसा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक, कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़, पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. अनिल सैनी ने नरमा फसल में होने वाले रोगो/बीमारियों की रोकथाम के बारे में किसानों को जागरूक किया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि कपास अनुभाग समय-समय पर नरमा फसल की एडवाइजरी जारी करता है जिसकी अनुपालना करके किसान नरमा फसल की अच्छी पैदावार ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कपास फसल के लिए कीट संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं:

कीट संबंधी सलाह

नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोडकर, उन्हें फाडकर गुलाबी सुण्डी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुण्डी प्रौढ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिण्डा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 ईसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ईसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फलोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोप्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें।

बीमारी संबंधी परामर्श

जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें। टिण्डा गलन के प्रबंधन के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करें।

महत्वपूर्ण सस्य क्रियाएं

बरसात के बाद पानी की निकासी का प्रबंध करें। पहले खाद नहीं डाली है तो अब निराई गुडाई के साथ एक बैग प्रति एकड़ की बीजाई करें। अगर डीएपी पहले डाल चुके हैं तो आधा कट्टा यूरिया प्रति एकड़ डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	17.07.2024	--	--

गांव उमरा व चूली कलां में हकृवि वैज्ञानिकों ने गुलाबी सुंडी के प्रबंधन को लेकर किसानों को दिए महत्वपूर्ण सुझाव

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा गुलाबी सुंडी एवं टिण्डा गलन की समस्या के निवारण हेतु कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के मार्गदर्शन में 'कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। गांव उमरा व चूली कलां में आयोजित कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं टिण्डा गलन की समस्या के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। किसानों को नरमा फसल की उपरोक्त समस्याओं से निजात दिलाने के लिए 'विश्वविद्यालय आपके द्वार' तर्ज पर गांव-गांव कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

गांव उमरा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय स्टेशन सिरसा, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। केन्द्रीय कपास अनुसंधान सिरसा के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक, कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़, पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. अनिल सैनी ने नरमा फसल में होने वाले रोगों/बीमारियों की रोकथाम के बारे में किसानों को जागरूक किया। इस तरह के कार्यक्रम जिले के कृषि अधिकारियों एवं कीटनाशक विक्रेताओं के लिए भी आयोजित किए जाएंगे ताकि गुलाबी सुंडी की समस्या को कम किया जा सके। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि कपास अनुभाग समय-समय पर नरमा फसल की एडवाइजरी जारी करता है जिसकी अनुपालना करके किसान नरमा फसल की अच्छी पैदावार ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि कृषि वैज्ञानिकों ने कपास फसल के लिए कीट संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

कीट संबंधी सलाह:

नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाड़कर गुलाबी सुण्डी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुण्डी प्रौढ़ प्रति ट्रेप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिण्डा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 ईसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉस 25 ईसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फ्लोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोप्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें।

बीमारी संबंधी परामर्श:

जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें। टिण्डा गलन के प्रबंधन के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

महत्वपूर्ण सस्य क्रियाएं:

बरसात के बाद पानी की निकासी का प्रबंध करें। पहले खाद नहीं डाली है तो अब निराई गुड़ाई के साथ एक बैग प्रति एकड़ की बीजाई करें। अगर डीएपी पहले डाल चुके हैं तो आधा कट्टा यूरिया प्रति एकड़ डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	18.7.24	2	6-8

दैनिक भास्कर

बिजाई के समय डीएपी खाद डाली है तो बारिश के बाद कपास में 1 बैग यूरिया का छिड़काव करें

अधिक बरसात के बाद खेत से पानी जरूर निकालें किसानः बीआर काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। बिजाई के समय डीएपी डाला है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में 1 बैग यूरिया का छिड़काव करें। बिजाई के समय डीएपी नहीं डाला है तो बरसात के बाद 1 बैग डीएपी की बिजाई करें। देसी कपास में खाद डालने की जरुरत नहीं है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि किसान बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें व फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद खेत से पानी निकालें। बेहतर होगा कि सारा जिंक सल्फेट बिजाई के समय डालें। अगर नहीं डाला गया हो तो डोडी बनते समय नाली द्वारा दें। सूक्ष्म पोषक तत्त्व जैसे की बोरोन, मैगनीज और आयरन केवल लक्षण दिखाई देने पर ही डालें।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी सुंडी से प्रभावित पौधों पर लगे रोजेटी फूल को समय पर नष्ट करते रहें। 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं व इनमें फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को 3 दिन के अंतराल पर गिनती करें। यदि इनमें कुल 12-15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक का छिड़काव की आवश्यकता है, 60 दिनों तक फसल में एक छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक नीम्बीसिडीन या अचूक की 5 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें।

सफेद मक्खी व हरे तेला का हो सकता है प्रकोप

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल मलिक ने बताया, जुलाई में कपास की फसल में सफेद मक्खी व हरे तेला का प्रकोप हो जाता है। इनकी निगरानी रखें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो फ्लोनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लूजी की 60 ग्राम या एफिडोपायरोफेन 50 जी एल की 400 मात्रा प्रति 150 - 175 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	16.07.2024	4	6-8

कपास को सफेद मक्खी-हरे तेला से बचाएं

खेत-खलिहान

कपास की फसल की बुआई चल रही है। इसके साथ ही हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। विज्ञानियों का कहना है कि जुलाई माह में कपास की फसल में सफेद मक्खी व हरे तेला का प्रकोप शुरू हो जाता है। इस लिए किसानों को निगरानी रखने की जरूरत है। हकृवि के कपास विभाग के विज्ञानियों ने बताया कि सफेद मक्खी 6 से 8 प्रति पत्ता एवं हरा तेला दो शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो उस पर छिड़काव की जरूरत है।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डा. करमल सिंह ने बताया कि किसानों को बुआई के बाद अब सतर्क रहने की सलाह भी दी जाती है। उन्होंने बताया कि किसानों को अपनी फसल को लेकर सतर्क रहने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि कीट प्रबंधन के लिए किसानों को नरमा की फसल के आस पास कोई नरमा की बनछटियां नहीं रहने देनी चाहिए। बनछटिया का प्रबंधन नरमा की फसल में बौकी-डोडली निकलने से पहले ही करें। फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी सुंडी से ग्रसित फूलों एवं रोजेटी फूल आदि को एकत्रित कर नष्ट करें।

हिसार के गांव चौधरीवाली में कपास में आए खराबे के बाद उसे ट्रैक्टर से जोतते हुए किसान। • जागरण

किसानों के लिए विश्वविद्यालय की तरफ से एडवाइजरी जारी की गई है। किसानों को उस पर अमर करते हुए विज्ञानियों के संपर्क में रहना चाहिए। यदि कोई रोग दिखता है या सलाह लेनी है कि वह विज्ञानियों से बातचीत करें।

- प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

ऐसे करें रोग प्रबंधन

- जड़ गलत बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा देना चाहिए, ताकि बीमारियों को रोका जा सके।
- रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वास्थ्य पौधों में एक मीटर तक कार्बेडाजिम दो ग्राम प्रति लीड पानी घोलकर जड़ों में डालें
- जड़ गलत रोग के लिए दवाई को जड़ों के पास इस फंफूदनाशक घोल को डालें।
- पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की और मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें।
- फसल की लगातार निगरानी रखें व प्रारंभ में पत्ती मरोड़ रोग से ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर दबा देना चाहिए।

प्रस्तुति : अमित धवन, हिसार